# प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम खुला पत्र

**उत्तरकाशी/24.02.2018**

**प्रिय छोटे भाई नरेन्द्र मोदी,**

## माता-पिता पूर्वजों के प्रति कर्तव्य पालन का यश प्राप्त करो

भाई, प्रधान मंत्री तो तुम बाद में बने, माँ गंगा जी के बेटों में तो मैं तुमसे 18 वर्ष बड़ा हूँ। 2014 के लोक-सभा चुनाव तक तो तुम भी स्वयं माँ गंगा जी के समझदार, लाडले और माँ के प्रति समर्पित बेटा होने की बात करते थे - पर वह चुनाव माँ के आशीर्वाद और प्रभु राम की कृपा से जीतकर अब तो तुम माँ के ही कुछ लालची, विलासिता प्रिय बेटे-बेटियों के समूह में फँस गये हो और उन नालायकों की विलासिता के साधन (जैसे अधिक बिजली) जुटाने के लिये, जिसे तुम लोग विकास कहते हो, कभी जलमार्ग के नाम से बूढ़ी माँ को बोझा ढोने वाला खच्चर बना डालना चाहते हो, कभी ऊर्जा की आवश्यकता पूरी करने के लिये हल का, गाड़ी का या कोल्हू जैसी मशीनों का बैल। माँ के शरीर का ढेर सारा रक्त तो ढेर सारे भुखने बेटे-बेटियों की फौज को पालने में ही चला जा रहा है जिन नालायकों की भूख ही नहीं मिटती और जिन्हें माँ के गिरते स्वास्थ्य का जरा भी ध्यान नहीं। माँ के रक्त के बल पर ही सूरमा बने तुम्हारी चाण्डाल चौकड़ी के कई सदस्यों की नजर तो हर समय जैसे माँ के बचे-खुचे रक्त को चूस लेने पर ही लगी रहती है, माँ जीवित रहें या भले ही मर न जायें। तुम्हारे

संविधान द्वारा घोषित इन बालिगों को तो जैसे माँ को माँ नहीं, अपनी सम्पत्ति मानने का अधिकार मिल गया है। समझदार बच्चे तो नाबालिग या छोटे रहने पर भी मातृ-ऋण उतारने की, माँ को स्वस्थ-सुखी रखने की ही सोचते हैं और अपने नासमझ भाई-बहनों को समझाते भी हैं। वे कुछ नासमझ, नालायक, स्वार्थी भाई-बहनों के स्वार्थ परक हित-साधन के लिये माँ पर बोझा लादने, उसे हल, कोल्हू या मशीनों में जोतने की तो सोच भी नहीं सकते खून चूसने की तो बात ही दूर है।

तुम्हारा अग्रज होने, तुमसे विद्या-बुद्धि में भी बड़ा होने और सबसे ऊपर माँ गंगा जी के स्वास्थ्य-सुख-प्रसन्नता के लिये सब-कुछ दाँव पर लगा देने के लिये तैयार होने में तुमसे आगे होने के कारण गंगा जी से सम्बन्धित विषयों में तुम्हें समझाने का, तुम्हें निर्देश तक देने का जो मेरा हक बनता है वह माँ की ढेर सारी मनौतियों और कुछ अपने भाग्य और साथ में लोक-लुभावनी चालाकियों के बल पर तुम्हारे सिंहासनारूढ़ हो जाने से कम नहीं हो जाता। उसी हक से मैं तुमसे अपनी निम्न अपेक्षाएँ सामने रख रहा हूँ-

**अपेक्षा (क):** त्रिपथा माँ गंगा जी की अलकनन्दा बाहु को छेदन करने वाली विष्णुगाड़-पीपलकोटी परियोजना तथा मन्दाकिनी बाहु को छेदन करने वाली फाटा-व्यूंग, सिगोली-भटवारी परियोजनाओं पर सभी निर्माण कार्य तुरन्त बन्द हों और तब तक बन्द रहें जब तक,

(अ) अपेक्षा (ख) के अन्तर्गत उन पर संसद में विस्तृत चर्चा के बाद मत-विभाजन द्वारा माँ गंगा जी के हितों की दृष्टि से आवश्यक निर्णय न हो (और)

(आ) अपेक्षा (ग) में बताई गई परिषद की भी सहमति न हो

**अपेक्षा (ख):** तुम्हारी सरकार द्‌वारा माँ गंगा जी के संरक्षण तथा उनके स्वास्थ्य में सुधार के हित में प्रबन्धन के उद्‌देश्य से लगभग दो वर्ष पूर्व गठित की गई न्यायमूर्ति गिरिधर मालवीय समिति के द्‌वारा प्रस्तावित गंगा जी संरक्षण विधेयक को अविलम्ब संसद में विचारकर उसे पारित करने की बजाये, उसे ठण्डे बस्ते में डाल देने के अपराधी यदि तुम नहीं तुम्हारा कोई नालायक सहयोगी या अधिकारी है तो उसे तुरन्त बर्खास्त करो और स्वयं पश्चाताप स्वरूप शीघ्रातिशीघ्र उसे पारित तथा लागू कराओ। **विक्रम सं. 2075 में गंगा संरक्षण विधेयक के कानून बनकर लागू होने तक संसद अन्य कोई भी कार्य न करें - श्रद्‌धांजली या शोक प्रस्ताव या प्रश्न काल भी नहीं - माँ गंगा जी के संरक्षण से ऊपर अब कुछ नहीं।**

**अपेक्षा (ग):** राष्ट्र में एक गंगा-भक्त परिषद गठित हो जिसमें सरकारी और गैर-सरकारी दोनों प्रकार के व्यक्ति सम्मिलित हो सकें पर प्रत्येक सदस्य प्रवेश पर यह शपथ लें कि वह कुछ भी सोचते, कहते, करते समय गंगा जी के हितों का ध्यान रखेगा और उसका कोई भी बयान, सुझाव, प्रस्ताव, सहमति या कार्य ऐसा नहीं होगा। जिससे माँ गंगा जी का रत्ती भर भी अहित होने की सम्भावना हो। गंगा जी के विषय में किसी भी निर्माण या विकास कार्य को करने के लिये गंगा-संरक्षण विधेयक (कानून) के अन्तर्गत स्वीकार्य होने के साथ-साथ इस गंगा-भक्त परिषद की सहमति भी आवश्यक हो।

पिछले साढ़े तीन से अधिक वर्ष तुम्हारी और तुम्हारी सरकार की प्राथमिकताएँ और कार्य पद्‌धति देखते हुए मेरी अपेक्षाएँ मेरे जीवन में

पूरा होने की सम्भावना नगण्य ही है और माँ गंगा जी के हितों की इस प्रकार उपेक्षा से होने वाली असह्य यातना से मेरा जीवन ही यातना बनकर रह गया है- **अतः मैंने निर्णय किया है कि गंगा दशहरा (22 जून 2018 सा.श.) तक उपरोक्त तीनों अपेक्षाएँ पूर्ण न होने की स्थिति में मैं आमरण-उपवास करता हुआ और माँ गंगा जी को पृथ्वी पर लाने वाले महाराजा-भगीरथ के वंशज शक्तिमान प्रभु राम से माँ गंगा के प्रति अहित करने और अपने एक गंगा भक्त बड़े भाई की हत्या करने के अपराध का तुम्हें समुचित दण्ड देने की प्रार्थना करता हुआ प्राणत्याग दूँ।**

**तुम्हारा माँ गंगा भक्त बड़ा भाई,**

**स्वामी ज्ञान स्वरूप सानन्द**
**(सन्यास पूर्व - डॉ. गुरुदास अग्रवाल, पूर्व प्रोफेसर, आई.आई.टी. कानपुर एवं सदस्य-सचिव CPCB नई दिल्ली)**